ISBN: 978-81-974088-0-9

8. बालक दिव्यांग की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं

ममता महेश्वरी

सहायक प्राध्यापक,
क्रुति स्कूल का बिजनेस मैनेजमेंट, रायपुर छ. ग.

जो बालक स्वयं की शारीरिक अक्षमताओं के कारण औसत बालकों की समान अपनी क्रियाकलाप संपन्न नहीं कर पाते हैं उन्हें दिव्यांग बालक कहते हैं। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है।जब तक शरीर स्वस्थ नहीं होगा तब तक मनुष्य सामान्य रूप से कार्य करने में असमर्थ होगा।बालक का स्वास्थ्य उसके कार्य को प्रभावित करता है,जिससे उसका विकास भी प्रभावित होता है।दिव्यांग बालकों की संख्या ध्यान आकर्षित करने वाली है।।यह एक सोचनीय विषय है।

दिव्यांग बालकों के प्रकार -

1. अपगं बालक
2. दृष्टि बाधित बालक
3. श्रवण बाधित बालक
4. वाणी बाधित बालक

दृष्टि बाधित बालक वे होते हैं जिन्हें या तो बिल्कुल दिखाई नहीं देता या फिर एक आंख से दिखाई देता है, या कम दिखाई देता है।

श्रवण बाधित बालक वे बालक है जिन्हें बिल्कुल सुनाई नहीं देता या फिर कम सुनाई देता है, जिन्हें हम बहरापन भी कहते हैं।

वाणी बाधित बालक वे बालक है, जो कुछ बोल नहीं पा सकते या तुतलाकर बोलते हैं या फिर हकलाकर बोलते है, अधिकतर यह देखा जाता है कि ऐसे लोग जन्म से ही गूंगे होते हैं या फिर बाहरे भी होते हैं। और जो बच्चे गूंगे होते हैं वहीं बाहरे भी होते हैं।

दिव्यांग बालक का अर्थ-

दिव्यांग बालक वे होते हैं जिनके शरीर का कोई क्रियाशील अंग जैसे - हाथ, पैर,अंगुली,हड्डियां, मांसपेशियां, आंख, कान नाक इत्यादि या तो जन्मजात या बीमारी के कारण या दुर्घटना वश भंग हो जाते हैं या क्षतिग्रस्त होकर कमजोर हो जाते हैं।

दिव्यांग बालक की परिभाषा-

क्रो एवं क्रो ने ऐसे बालकों को परिभाषित करते हुए कहा है- " एक व्यक्ति जिसको कोई शारीरिक दोष होता है, जो किसी भी प्रकार से उसे सामान्य क्रियाओं में भाग लेने से रोकता है, अथवा उसे सीमित रखना है, उसे हम शारीरिक न्यूनता ग्रस्त या विकलांग व्यक्ति का सकते हैं।"

डिक्शनरी डॉट कॉम-

विकलांगता को ज़्यादा व्यावहारिक रूप में परिभाषित करती है। इसके अनुसार विकलांगता एक शारीरिक या मानसिक विकलता है, विशेषतः वह जो एक व्यक्ति को सामान्य ज़िंदगी जीने या अपनी जीविका कमाने से रोकती हो ।

दिव्यांग बालकों की विशेषताएं-

दिव्यांग बालकों की विशेषताएं उनकी विकलांगता के प्रकार के अनुसार होती है, किंतु कुछ ऐसी विशेषताएं भी होती हैं जो अधिकतर सभी प्रकार के दिव्यांगों में सामान रूप से पाई जाती है।ऐसी ही कुछ विशेषताएं निम्नलिखित है-

1 - शारीरिक रूप से विकलांग बालकों की शिक्षा सामान्य बालकों के साथ चलने में अधिकतर कठिनाई आती है।

2 - इनका कोई ना कोई शारीरिक अंग या तो भंग होता है या फिर क्षतिग्रस्त हो जाता है।

3 - यह बालक अपने दैनिक आवश्यक कार्य सामान्य बालकों की भांति नहीं कर पाते हैं। इन्हें हर कार्य को करने में अधिक समय लगता है तथा कभी-कभी कुछ विशेष उपकरणों का भी सहारा लेना पड़ता है जैसे बैसाखी, श्रवण मशीन इत्यादि।

4 - एक बालक में कभी-कभी एक से अधिक दोष भी देखे जाते हैं।

5 - इन बालकों की कोई एक शक्ति यदि कमजोर पड़ जाती है तो यह अपनी अन्य शक्तियों की सहायता से अपना जीवन जीने में भी सक्षम होते हैं।

6 - इन बालकों का शारीरिक अंग क्षतिग्रस्त हो जाने पर भी ये हतोतसाहित नहीं होते हैं, परंतु समाज की उपेक्षा और तिरस्कार से आहत होकर ये हीन भावना की शिकार हो जाते हैं।

7 - इन्हें सही मार्गदर्शन, सहायता, यंत्रों के उपयोग, समुचित शिक्षा तथा मानसिक सहयोग देकर समाज की मुख्य धारा के साथ जोड़ा जा सकता है।

विकलांगता के कारण - मनुष्य में विकलांगता के दो कारण होते हैं-

1. अनुवांशिकता
2. पर्यावरण या वातावरण

आनुवांशिक कारण -

बालक की शारीरिक रचना ,बनावट बहुत कुछ अनुवांशिकता पर आधारित होती है। बालक की चेहरा एवं उसके हाथ पैर की बनावट उसके माता-पिता पारिवारिक सदस्यों या पूर्वजों से मिलती-जुलती होती है।

इसी प्रकार कुछ बीमारियां और विकलांगता भी वंशानुगत संतानों में आ जाती है। यही कारण है कि कुछ जन्म से ही अंधे, बहरे, लूले -लंगड़े अथवा बीमार पैदा होते हैं।

किसी की आंख में कमजोरी होती है तो किसी की हड्डियों मांसपेशियों तथा अन्य बीमारियों का शिकार होता है।

वातावरण के कारण-

वातावरण के प्रभाव के कारण बालकों में आने वाली विकलांगता का वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है-

1. गर्भावस्था में महिलाओं की देखभाल, खान-पान, चिकित्सा आदि समुचित रूप में न हो पाने के कारण गर्भस्थ शिशु में अनेक प्रकार की दोष उत्पन्न हो सकते हैं। ऐसी विकलांगता बालकों को जन्म के साथ ही प्राप्त होती है।

2. जन्म लेने के बाद यदि बालक का लालन-पालन तथा भरण-पोषण आदि भली-भांति नहीं किया जाता है। उससे भी हड्डियों, हाथ-पैरों आदि से सम्बन्धित अनेक दोष एवं बीमारियां उत्पन्न हो सकते हैं। पोलियो की बीमारी इसका उदाहरण है।

3. कभी-कभी भयानक दुर्घटना होने के कारण भी विकलांगता आ जाती है। आजकल विकलांगता को दूर करने में चिकित्सा विज्ञान को सफलता मिलने लगी है।

4. मानसिक आघात आदि से भी विकलांगता आ सकती है। जैसे चेचक कैंसर, हार्ट अटैक, पोलियो आदि में शरीर का कोई भाग बेकार हो सकता है।

स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं ---

स्वास्थ्य बाधित बालकों की समस्याओं का वर्गीकरण-

जिन बालकों का स्वास्थ्य बहुत कमजोर होता है उन्हें स्वास्थ्य संबंधी विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है।

इन्हें मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

1. सामान्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं

2. गंभीर स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं

1. सामान्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं वाले बालक-

इन समूह के बालक शिक्षा ग्रहण करने योग्य होते हैं। इनकी स्वास्थ्य की समस्याएं इनकी अधिगम प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न नहीं करती है परंतु आवश्यकतानुसार सावधानी रखने की आवश्यकता होती है।उनका डॉक्टरी परीक्षण समय-समय पर होते रहना चाहिए।

2. गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं वाले बालक -

ऐसे बालक लगातार बीमार रहते हैं और लगातार उन्हें अस्पतालों में रखना पड़ता है अथवा डॉक्टरी देखरेख में यह बच्चे रहते हैं। यह शैक्षिक क्रियाओं में भाग ले सकते हैं। ऐसे बालक जल्दी ही थकान महसूस करने लगते हैं। ऐसे बालकों को अधिगम प्रक्रिया के दौरान 15 से 20 मिनट में आराम करने दिया जाता है।

कुछ दिव्यांग बालक संक्रामक रोगों से ग्रस्त होते हैं। इन बालकों को विशिष्ट शिक्षा के कार्यक्रम की आवश्यकता होती है। इस प्रकार के बालकों की शिक्षा की विशेष योजना बनानी पड़ती है। लंबे समय तक बीमार रहने के कारण श्रवण बाधिता और दृष्टि बाधित्ता भी आ जाती है।

कुछ बालक लंबे समय तक बीमार रहने के कारण भी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से ग्रसित रहते हैं।जिनमें भाषा दोष, एवं वाणी दोष भी आ जाते हैं क्योंकि इस प्रकार के बालक बहूबाधित हो जाते हैं।जो बालक शारीरिक रूप से बाधित होते हैं लेकिन उनकी ज्ञानेंद्रिया सक्रिय रूप से कार्य करती है उन्हें दिव्यांग बालक की श्रेणी में रखा जाता है।

स्वास्थ्य बाधित बालकों का वर्गीकरण का आधार मुख्य रूप से उनके रोग ही होते हैं जैसे-

1- मिर्गी रोग से ग्रसित बालक

2 - मधुमेह रोग से ग्रसित बालक

3- दमा रोग से ग्रसित बालक

4- गठिया रोग से ग्रसित बालक

5 -खून की कमी से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं

1- मिर्गी रोग से ग्रसित बालक-

यह एक विशिष्ट प्रकार का समस्या है। इस रोग के प्रमुख लक्षण है कि बच्चों को अचानक दौरे पड़ते हैं। बालक कभी-कभी दौरौ के साथ चिल्लाता भी है। दोरौ के दौरान बालक मूर्छित और बेहोश हो जाता है, और हाथ पैरों को हिलाता भी नहीं है।मिर्गी की कुछ दवाइयां बनी है,और इस रोग पर नियंत्रण किया जा रहा है। कुछ दौर काफी गंभीर होते हैं इसलिए शिक्षक को ऐसे बालको को विशेष ध्यान देना चाहिए। ऐसे बालकों को तनाव नहीं देना चाहिए, जिससे मस्तिष्क पर वह दबाव डालें। दौरे के दौरान आसपास की वस्तुओं को हटा देना चाहिए, जिससे कोई शारीरिक हानी न पहुंचे। यदि दौरे के दौरान उसका मुंह खुला रह गया तो उस पर रुमाल ढक देना चाहिए। दौरे के बाद जब बच्चा सामान्य हो जाता है तो उन्हें आराम करने देना चाहिए और उनके माता-पिता को सूचित करना चाहिए। अध्यापक को यह मालूम होना चाहिए कि यह कोई देवी शक्ति नहीं है, बल्कि मानसिक रोग के कारण दौरे पड़ते हैं। ऐसे बालकों के प्रति शिक्षक को सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

2- मधुमेह रोग से ग्रसित बालक -

मधुमेह रूप से ग्रसित बालकों को भूख अधिक लगती है ,प्यास अधिक लगती है,पेशाब बार-बार जाते हैं, आंतरिक रूप से कमजोर हो जाते हैं। अगर शरीर में कोई चोट लग जाए तो घाव जल्दी नहीं भरता है, पैरों में अक्सर दर्द रहता है।

इस प्रकार का रूप सभी प्रकार के बालकों में हो सकता है जैसे- सामान्य बालक बाधित बालक असमर्थी बालक। शिक्षक का यहां फर्ज बनता है कि उनकी आरंभिक अवस्था को पहचाने और उन्हें डॉक्टर से समुचित उपचार की व्यवस्था कराए, साथ ही साथ उनके पिता को भी आगाह करें। इस बीमारी के लिए और खाने पीने की चीजों में परहेज रखें और समय पडने पर इंसुलिन का टीकाकरण भी दिया जाए।

3- दमा रोग से ग्रसित बालक -

ऐसे बालकों को सांस लेने में तकलीफ होती है। यह रोग एलर्जी के कारण होता है। ऐसे बालक श्वास लेने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।यह रोग अधिक शारीरिक काम करने से संवेगों से और तनाव से उत्पन्न होता है।

इस रोग का उपचार नहीं है परंतु कुछ दवाओं के प्रयोग से और निहिलर की सहायता से कुछ हद तक इसे रोका जा सकता है।जिससे यह रोग गंभीर अवस्था में नहीं पहुंचता है। शिक्षकों का यह फर्ज बनता है कि ऐसे बालको से अधिक शारीरिक काम नहीं लेना चाहिए और नहीं ऐसी कोई विषम परिस्थिति उत्पन्न की जाए जिसमें उसे मानसिक तनाव हो।

4- गठिया रोग से ग्रसित बालक-

गठिया रोग में बालकों के हर एक जोड़ों में निरंतर दर्द रहता है, उसे ही गठिया रोग कहा जाता है। इसमें दर्द के साथ-साथ जोड़ों में कुछ सूजन भी आ जाती है। इसका प्रभाव उनके विकास पर भी पड़ता है।

बालक कार्य करने में असमर्थ महसूस करते हैं। यह रोग शुरुआत में उंगली में, जोड़ों में, कलाई में होता है बाद में धीरे-धीरे हर एक जोड़ों में यह दर्द बढ़ता चला जाता है और यह दर्द असनीय हो जाता है।

बारिश के मौसम में जब बदली होती है तब यह दर्द ज्यादा बढ़ता है। शारीरिक व्यायाम से इस दर्द में राहत मिलती है। यहां पर भी शिक्षक का अहम रोल होता है कि शिक्षक उनकी कठिनाइयों को समझें और उन्हें सहायता प्रदान करें। गृह कार्य करने में भी इन्हें ज्यादा समय की जरूरत होती है।

ऐसे समय में इन्हें सहयोग प्रदान किया जाना चाहिए - जैसे किस प्रकार लिखे,किस प्रकार पढ़े, किस प्रकार कॉपी, पेंसिल पकड़े।इन सब चीजों में उनकी सहायता प्रदान की जानी चाहिए। यहां शिक्षक का अहम रोल है कि ऐसे बालक को हर एक गतिविधि में शामिल होने का मौका दिया जाना चाहिए और उन्हें हर एक गतिविधि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

5- खून की कमी से ग्रसित बालक-

बहुत से दिव्यांग बालक में अधिकतर खून की कमी पाई जाती है। जिससे बालक कमजोर हो जाता है और शरीर में दर्द भी होता है। खून की कमी से बालकों में पीलिया और अन्य रोग हो जाते हैं। इनकी हड्डियों में घुटने में जोड़ों में दर्द रहता है। कमजोरी के कारण सर में भी निरंतर दर्द रहता है। बालक कभी-कभी मूर्छित होकर भी गिर जाते हैं । इसका मुख्य कारण है खून की कमी। यहां भी शिक्षक का अहम रोल है।शिक्षक को ऐसे बालकों को डाक्टरी परीक्षण कराया जाना चाहिए। विद्यालय में सभी बालकों के समय-समय पर इस प्रकार के रोग का परीक्षण कराया जाना चाहिए।

स्वास्थ्य बाधित बालकों के लक्षण-

इसकी पहचान के लिए निम्नलिखित लक्षणों को ध्यान में रखना चाहिए-

1- अक्सर खाँसी रहती है।
2- बालक लंबी और गहरी सांस लेता है।
3- त्वचा का नीला तथा दरदरापन होना।
4- भूख अधिक लगाना।
5- 5-जल्दी थक जाना।
6- जल्दी विचलित हो जाना।
7- असामान्य व्यवहार।
8- बार-बार पानी पीना।
9- शरीर में खुजली होना।
10- पसीना अधिक आना।
11- वजन कम हो जाना।
12- शारीरिक श्रम करने में श्वास फूलना।
13- सीने में जलन होना।
14- होठों का नीला होना।
15- अक्सर मूर्छित हो जाना।
16- शरीर में दर्द रहना।
17- नाखून का नीला पडना।

18- गुस्सा जल्दी आना।
19- अत्यंत क्रोधी स्वभाव का होना।
20- संवेगात्मक संतुलन खो देना।
21- असमयोजन की प्रवृत्ति।
22- दूसरे बच्चों के साथ जल्दी ना घुलना मिलना।
23- निम्न शैक्षिक उपलब्धि
24- कक्षा में अधिक अनुपस्थित होना।
25- चिड़चिड़ा स्वभाव।
26- बहुत जल्दी थक जाना।

स्वास्थ्य बाधित बालकों की समस्याओं के कारण-

1- अनुवांशिकता के कारण भी स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न होती है।

2- गर्भावस्था के दौरान माता को सही वातावरण न मिलाना।

3- गर्भावस्था में संक्रामक रोग हो जाना।

4- मस्तिष्क में आघात पहुंचाना।

5- पुरानी दावों का दुष्प्रभाव होना।

दिव्यांग तथा बीमार बालकों के लिए शैक्षिक प्रावधान-

आवश्यकतानुसार उपचार सुविधा-

दिव्यांग तथा बीमार बालकों को उपचार की समुचित व्यवस्था मिलनी चाहिए। उन्हें समय-समय पर योग्य एवं कुशल चिकित्सक को दिखाना चाहिए। ऐसे बालकों को समय-समय पर अस्पताल में भर्ती करने की आवश्यकता पड़ सकती है, ऐसी स्थिति में उन्हें विद्यालय से समय-समय पर अनुपस्थित होना पड़ सकता है, अतः विद्यालय से उन्हें उपस्थिति संबंधी छूट उन्हें प्रदान की जानी चाहिए। अधिक अनुपस्थिति के कारण उनके शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, अतः ऐसे दिव्यांग बालकों के लिए सफलता का मापदंड सामान्य बालको से अलग होना चाहिए। बालकों

की क्षमता तथा रोग की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए यह मापदंड तय किए जाने चाहिए।अक्षमता के कारण ऐसे बालक सामान्य बालकों के करीब नहीं आ पाते हैं,जिसका नकारात्मक प्रभाव बालक पर पड़ता है।

अतः यहां शिक्षक का कर्तव्य बनता है कि सामान्य बालकों में दिव्यांग तथा असामर्थी बालकों के प्रति एक जागरूकता और समझ का विकास कराया जाना चाहिए। जिसे सामान्य बालक और दिव्यांग बालक नजदीक आने में ना हिचकिचाए।

विशेष अध्यापक-

दिव्यांग बालकों के लिए एक प्रशिक्षित अध्यापक की आवश्यकता होती है जो कि दिव्यांग बालक के मनोविज्ञान को समझते हुए उन्हें मार्गदर्शन प्रदान करें। बालक के सामाजिक संवेगात्मक और शारीरिक विकास का भी ध्यान रखें। अतः सरकार को ऐसे दिव्यांग बालकों के लिए विशेष अध्यापक की नियुक्ति की जानी चाहिए।

विशेष कक्षा-

कुछ दिव्यांग बालक या रोगी बालक ऐसे होते हैं जो सामान्य बालकों के साथ बैठकर शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते, ऐसे बालकों के लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाना चाहिए। कुछ विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों के द्वारा ऐसी कक्षाओं का संचालन किया जाना चाहिए।

अतिरिक्त कक्षा-

अस्वस्थ बालक नियमित कक्षाओं में पूर्णतया लाभ नहीं उठा पाते, अतः ऐसे बालकों के लिए अतिरिक्त कक्षा का आयोजन किया जाना चाहिए। ऐसे बालकों को सामान्य कक्षाओं के साथ-साथ कुछ अतिरिक्त ज्ञान की भी आवश्यकता होती है, जिससे वे अध्यापक उनकी सामाजिक और संवेगात्मक समस्याओं को समझकर उनका हल निकाल सके।

विशेष विद्यालय-

कुछ बालकों में विकलांगता बहुत अधिक होती है, जिसके कारण भी सामान्य कक्षाओं से लाभान्वित नहीं हो पाते हैं, ऐसे बालकों के लिए विशेष कक्षाएं और अतिरिक्त कक्षाएं भी उन्हें लाभ नहीं पहुंच पाती हैं। ऐसी स्थिति में विशेष विद्यालय मुख्यतः विकलांग बालकों के लिए ही बनाया जाना चाहिए। यह विद्यालय पूर्णतया दिव्यांग बालकों तथा रोगी बालकों को ध्यान में रखकर बनाए जाने चाहिए-

निम्नलिखित विशेष सुविधा इन विशेष विद्यालयों में दिव्यांग और रोगी बालकों के लिए उपलब्ध कराई जानी चाहिए-

- शारीरिक उपचार कक्ष होना चाहिए जहां दवाइयां और चिकित्सक होने चाहिए
- बालकों की शारीरिक अक्षमता को ध्यान में रखते हुए व्यायाम शाला होनी चाहिए, जो बालकों को मनोरंजन के साथ शारीरिक उपचार भी प्रदान कर सके।
- विद्यालय की इमारत दिव्यांग बालकों को ध्यान में रखकर बनाई जानी चाहिए। उदाहरणार्थ - लकवा से पीड़ित बालकों की कक्षाएं पहली मंजिल में आयोजित की जानी चाहिए। दरवाजे काफी चौड़े होनी चाहिए जिससे पहियेदार कुर्सी आसानी से अंदर आ सके।
- कक्षा कक्ष में बैठने की व्यवस्था भी विकलांग और रोगी बालकों की आवश्यकता अनुसार होनी चाहिए। ऐसे बालकों के लिए कुर्सी -मेज उनकी ऊंचाई के अनुसार होनी चाहिए।
- विद्यालय में एक विश्राम कक्ष होना चाहिए।आवश्यकतानुसार बालक वहां जाकर विश्राम कर सके।
- आवासीय सुविधा हेतु छात्रावास का निर्माण किया जाना चाहिए। यह छात्रावास भी दिव्यांग और रोगी बालकों की विशेष आवश्यकतानुसार तैयार किए जाने चाहिए।
- दिव्यांग और असक्षम बालकों को शिक्षित करने के लिए प्रशिक्षित अध्यापक का होना आवश्यक है।
- दिव्यांग और रोगी बालकों को ध्यान में रखते हुए एक पुस्तकालय होना भी आवश्यक है।

विशेष पाठ्यक्रम-

सामान्य बालको से दिव्यांग बालकों का पाठ्यक्रम अलग होना चाहिए। बालकों की विकलांगता को देखकर उनका पाठ्यक्रम तैयार किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम ऐसा तैयार किया जाना चाहिए जिससे बालक को स्वावलंबी बनाया जा सके और भविष्य में उनके लिए रोजगार प्राप्त हो सके।

सामान्यता एक दिव्यांग और चिरकालिक रोगी बालक दया का पात्र बन जाता है और वह यह समझने लगता है कि वह अपनी विकलांगता और रोग के कारण कोई भी कार्य नहीं कर सकता। परंतु वस्तु स्थिति इससे काफी भिन्न है ऐसी बालक दया की नहीं अपितु सहानुभूति तथा उचित अवसर प्राप्त करने के योग्य हैं। ऐसे बालक एक क्षेत्र में सक्षम होते हुए भी कुछ अन्य विशेषताएं और योग्यताएं लिए हुए होते हैं। उन विशेष योग्यताओं के आधार पर उन्हें रोजगार दिलाना हमारा कर्तव्य है।

भारत सरकार द्वारा दिव्यांगों हेतु व्यावसायिक पुनर्वास केंद्र खोले गए हैं। यह केंद्र विकलांगों की विभिन्न आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए उनकी रुचि,अभिवृत्ति, अभियोग्यता व्यक्तित्व, का मापन कर उनकी योग्यता अनुसार व्यवसाय का चयन करती है। चयनित व्यवसाय से संबंधित उन्हें प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है, जिसे उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान की जा सके। प्रशिक्षण उपरांत यह केंद्र व्यवसाय में उन्हें व्यवस्थित करते हैं, और निर्देशन प्रदान करते हैं। इस प्रकार दिव्यांगों तथा चिरकालिक रोगी बालक के मनोविज्ञान को समझ कर उन्हें शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए दिव्यांग बालकों के लिए न केवल राज्य राष्ट्र स्तर पर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कार्य चल रहे हैं।

निष्कर्ष:

'दिव्यांग' या 'डिफरेंटली एबल्ड' जैसे शब्दों के प्रयोग मात्र से ही दिव्यांग लोगों के प्रति बड़े पैमाने पर समाज के विचारों को नहीं बदला जा सकता। ऐसे में यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि सरकार द्वारा नागरिक समाज और दिव्यांग व्यक्तियों के साथ मिलकर कार्य करते हुए ऐसे भारत के निर्माण का प्रयास किया जाए जहाँ किसी की दिव्यांगता पर ध्यान दिये बजाय सभी को समान दृष्टि से देखा जाए ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. पाठक, पी. डी,शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, संस्करण 2012 पृष्ठ 272
2. पाठक,पी.डी,शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन,आगरा, संस्करण 2012 पृष्ठ 274 – 278.
3. पाठक,पी. डी, शिक्षा मनोविज्ञान,अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, संस्करण 2012 पृष्ठ 280
4. बिष्ट,आभा रानी, विशिष्ट बालक, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2, संस्करण 2013 पृष्ठ 94
5. बिष्ट,आभा रानी, विशिष्ट बालक, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2, संस्करण 2013 पृष्ठ 96-100
6. बिष्ट,आभा रानी, विशिष्ट बालक, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2, संस्करण 2013 पृष्ठ 102
7. बिष्ट,आभा रानी, विशिष्ट बालक, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2, संस्करण 2013 पृष्ठ 105
8. शर्मा, योगेंद्र कुमार, शारीरिक रूप से विकलांग बालक, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स , नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012 पृष्ठ 209
9. कुलश्रेष्ठ,एस.पी, शिक्षा मनोविज्ञान आर लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण 2011 पृष्ठ 2021
10. http://sarkariguider.in